कविता की उड़ान करे निपुण लक्ष्यों को आसान

कमलेश कुमार वर्मा (स.अ.)
उ. प्रा. विद्यालय,
शाहपुर, फतेहपुर

उद्देश्य– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत प्राथमिक और पूर्व–प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों को मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने पर विशेष बल दिया गया है। विद्यार्थी अपनी स्थानीय भाषा को आसानी से समझते हैं और उससे जुड़ाव महसूस करते हैं। परन्तु अधिकतर शिक्षक अपनी भाषा में शिक्षण करते हैं जिससे विद्यार्थियों के लिए आधारभूत अवधारणाओं को समझना कठिन हो जाता है। अतः शिक्षक ने इस समस्या को समझते हुए बच्चों के संज्ञानात्मक विकास के मार्ग को सरल बनाने और उनको जड़ों से जोड़े रखने के उद्देश्य से स्थानीय भाषा पर स्वरचित कविताओं में हिन्दी वर्णमाला और संख्याओं को सरल और रचनात्मक तरीके से पढ़ाने का कार्य किया। जिससे विद्यार्थी अपनी संस्कृति से परिचित हों और साथ ही साथ हिंदी भाषा और गणित के आधारभूत ज्ञान भी प्राप्त कर सकें।

क्रियान्वयन– हिंदी वर्णमाला और गणित की संख्याओं को प्रभावी ढंग से सिखाने के लिए एक अभिनव प्रयास के रूप में, मुख्य रूप से क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग करते हुए स्वरचित कविताओं का उपयोग किया गया है। शिक्षक द्वारा स्व–रचित कविताओं के माध्यम से हिंदी की वर्णमाला और गणित की संख्याओं का ज्ञान बच्चों को कराया जा रहा है। इन कविताओं को बच्चों की स्थानीय बोली और संदर्भों को ध्यान में रखते हुए लिखा गया है, जिससे वे आसानी से इन्हें समझ सकें और सीखने में रुचि लें। हिंदी वर्णमाला और गणित संख्याओं को कविता में इस प्रकार पिरोया गया है कि बच्चे खेल–खेल में इनका ज्ञान प्राप्त कर लें। शिक्षक, कविताओं को अभिनय और गतिविधि–आधारित शिक्षण के माध्यम प्रस्तुत करता है। शिक्षक द्वारा पहले कविता को लयबद्ध तरीके से प्रस्तुत किया जाता है तत्पश्चात छात्र उसका अनुकरण करते हैं। इस प्रक्रिया के माध्यम से बच्चे अक्षरों की पहचान व उच्चारण से परिचित होते हैं। शिक्षक ने अक्षरों व गणित की अवधारणाओं पर कई कविताओं की रचना की है। कविता के पश्चात् बंद छोर के प्रश्न और खुले छोर के प्रश्न पूछ कर बच्चों की समझ का आंकलन किया जाता है।

उदाहरण रूवरूप कविताएँ:

शून्य में जोड़ सिखाने हेतु कक्षा 1, 2

एक, शून्य मिल होता एक
बन्दर मामा खाते केक
दो, शून्य मिल होते दो
खालो लड्डू मत रो
तीन, शून्य मिल होते तीन
जल में रहती है मीन
चार, शून्य मिल होते चार
भालू भइया खाते अचार
पाँच, शून्य मिल होते पाँच
आग में होती हैं, आँच
छः शून्य मिल होते छः
राजू, राधा घर में रह
सात, शून्य मिल होते सात
चलो अब हो गई रात
आठ, शून्य मिल होते आठ
सरसो से निकलता काठ
नौ, शून्य मिल होते नौ
रामू भइया बोते जौ

पर्यायवाची कक्षा 4 से 8

मेघ, जलद, और घन।
बरसे पानी छम, छम।।
पानी, अंबू और नीर।
न हो तो बेकार शरीर।।
वायु, अनिल और हवा।
शुद्ध मिले तो अच्छी दवा।।
नभ गगन और आसमान
इनके जैसा बनो महान
दोस्त, सखा और साथी
सुख दुख के हैं बाती।।
काया, शरीर और तन
स्वस्थ रहे तो खुश हो मन
रवि, दिवाकर और सूरज
सुबह निकलता है ये पूरब
पुस्तक, पोथी और किताब
मन में जगाती हैं विश्वास
गज, कुंजर और हाथी
मनुष्य का है अच्छा साथी

उदाहरण रूवरूप कविताएँ:

ग्रहों के नाम सिखाने हेतु कक्षा– 6

ग्रहों की महिमा अपरम्पार
पढ़ लो इसको बारंबार
बुध, शुक्र हो या अरुण मार
ये कर देंगे बेड़ा पार
पृथ्वी, शनि या वरूण यार
इनको कर लो सब तैयार
ग्रहों की महिमा अपरम्पार
पढ़ लो इनको बारंबार
वृहस्पति हो या मंगल यार
पढ़ लो इनको बारंबार
ग्रहों की महिमा अपरम्पार
पढ़ लो इनको बारंबार

2 से विभाज्यता का नियम कक्षा 6 से 8

इकाई की जगह '0' आता है.
वो दो से कट जाता है
30, 40, चाहे 100 आए
2 से पूरा कट जाए
इकाई की जगह 2 आता है
वो 2 से कट जाता है
12, 22 चाहे 102 आए
2 से पूरा कट जाए
इकाई की जगह 4 भाता है
वो दो से कट जाता है
24, 54 चाहे 64 आए
2 से पूरा कट जाए
इकाई की जगह 6 आता है
वो दो से कट जाता है
26, 36, चाहे 46 आए
2 से पूरा कट जाए
इकाई की जगह 8 आता है
वो दो से कट जाता है
28, 68, चाहे 88 आए
2 से पूरा कट ही जाए

प्रभाव–

ARP के रूप में, शिक्षक को प्रति माह 30 विद्यालयों का भ्रमण करने का अवसर प्राप्त होता है, जहां बच्चों के साथ काम किया जाता है। इन विद्यालयों में विद्यार्थियों ने शिक्षक की स्व–रचित कविताओं के माध्यम से हिंदी वर्णमाला और गणित के संख्याओं को समझने में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। कविताओं के उपयोग से न केवल उनकी हिंदी भाषा में पकड़ मजबूत हुई है, बल्कि गणित के प्रति भी उनकी समझ में सुधार आया है। बच्चों ने इन कविताओं के माध्यम से आसानी से संख्याओं और वर्णमाला को याद किया और उन्हें दैनिक जीवन में उपयोग करने की क्षमता विकसित की। इस नवाचारी प्रयास के सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं, जिस भी विद्यालय में इस नवाचार को किया गया वहां पर लगभग 90% बच्चों में संख्या और अक्षरों की पहचान का कौशल विकसित हुआ। इस नवाचार ने शिक्षा के क्षेत्र में एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया है, जहां परंपरागत शिक्षा पद्धतियों से हटकर, बच्चों की रुचि और क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए प्रभावी ढंग से शिक्षित किया जा रहा है। कविताओं के माध्यम से विषयों को सिखाने का यह तरीका बच्चों को रोचक और आसान लगा, जिससे उनकी सीखने की क्षमता में महत्वपूर्ण सुधार देखा गया। शैक्षिक गतिविधियों और कविताओं के माध्यम से बच्चों को पढ़ाने पर बच्चे सहज रूप से सीखते हैं, उनकी स्मरणशक्ति बढ़ती हैं और उन्हें विषयों को जल्दी आत्मसात करने में मदद मिलती हैं।